

डॉ. जॉर्ज पेटन, बाइबल अनुवाद, सत्र 22, मौखिक विचार और संबंधपरक वाक्यांश

© 2025 जॉर्ज पेटन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉर्ज पेटन द्वारा बाइबल अनुवाद पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 22 है, मौखिक विचार और जननात्मक वाक्यांश।

हम मौखिक विचारों के अनुवाद के बारे में बात कर रहे हैं।

हम इस बारे में बात कर रहे हैं कि जननात्मक वाक्यांशों का अनुवाद कैसे किया जाए। आज, हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि उन वाक्यांशों का अनुवाद कैसे किया जाए जो मौखिक विचारों वाले जननात्मक वाक्यांश हैं, उन्हें कैसे तोड़ा जाए, और उन्हें कैसे संप्रेषित किया जाए। इसलिए, इन निर्माणों की प्रकृति के कारण मौखिक विचारों का अनुवाद करना चुनौतीपूर्ण है।

जैसा कि हमने कहा, यह गूढ़ है। यह सारी जानकारी नहीं बताता है, और यह उनका उपयोग ऐसे तरीके से भी करता है जो तकनीकी रूप से क्रिया नहीं है। यह उनका उपयोग किसी अन्य चीज़ के रूप में करता है, जैसे संज्ञा या विशेषण।

और इसलिए, हमारे पास जननात्मक वाक्यांश भी हैं, और जब आपके पास जननात्मक वाक्यांशों में मौखिक संज्ञाएँ या मौखिक विचार होते हैं, तो यह और भी जटिल हो जाता है। जैसे क्या? मैं यहाँ एक उदाहरण देता हूँ। लूका 1 से, जॉन बैपटिस्ट की बात करते हुए, आपके बच्चे को परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहा जाएगा।

इसका क्या मतलब है? यह एक जननात्मक वाक्यांश है, और एक भविष्यद्वक्ता वास्तव में वह होता है जो भविष्यवाणी करता है। आप प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिए उसके आगे चलेंगे, उसके लोगों को पापों की क्षमा द्वारा उद्धार का ज्ञान देंगे। पापों की क्षमा, हमने कवर किया है।

उद्धार का ज्ञान, इसलिए वे इसके बारे में जानते हैं। यहीं पर समस्या है: एक और, इफिसियों 1:1, पौलुस, परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का एक प्रेरित।

और अगर आप किसी से पूछें, क्या आप जानते हैं कि इसका क्या मतलब है? वे कहेंगे, हाँ। अगर आप उनसे पूछें, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इसका क्या मतलब है? वे कहेंगे, उम्म, और यही समस्या है। हम पाठक पर बोझ कम करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वह चीज़ों को समझने की कोशिश करे।

इसका मतलब यह नहीं है कि बाइबल में सब कुछ समझना आसान है या इसे आसानी से समझाया जा सकता है, लेकिन हम क्या करने की कोशिश कर रहे हैं? हम यथासंभव अधिक से अधिक बाधाओं या कठिनाइयों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, व्याख्या करने की चुनौती तब और भी बढ़ जाती है जब इन मिश्रित वाक्यांशों में कभी-कभी मुहावरा या कोई अन्य

अलंकार होता है। उद्धार का ज्ञान देना जरूरी नहीं कि मुहावरा हो, लेकिन यह बोलने का एक मुहावरेदार तरीका है।

और आप ज्ञान कैसे देते हैं? ज्ञान देने का क्या मतलब है? आमतौर पर, कुछ ठोस दिया जाता है। मैंने टेड को किताब दी। लेकिन ज्ञान देने का क्या मतलब है? क्या इसका मतलब सिखाना है? क्या इसका मतलब सूचित करना या बताना है? इसका क्या मतलब है? ठीक है, एनएलटी इसे व्यक्त करता है, और एनएलटी इसे इस तरह से कहता है।

आप उसके लोगों को बताएँगे, इसलिए उन्होंने उस क्रिया को चुना, कि कैसे अपने पापों की क्षमा के माध्यम से मोक्ष पाया जाए। यह बेहतर है। मैं क्रिया के बारे में निश्चित नहीं हूँ, लेकिन अन्य समस्याएँ यह हैं कि इसमें अभी भी मोक्ष और क्षमा है, और यह उन्हें तोड़ती नहीं है।

यह पूरी समस्या है कि हमें उन्हें तोड़ने की ज़रूरत है ताकि फिर इसे और अधिक समझने योग्य बनाया जा सके। ठीक है, तो ये चुनौतियाँ पूरे नए नियम में आम हैं, खासकर पत्रों में, लेकिन केवल पत्रों में ही नहीं। उदाहरण के लिए, इफिसियों से फिर से, वह हमें गोद लेने के लिए पूर्वनिर्धारित करता है।

मुझे गोद लेने को रेखांकित करना चाहिए था; यह एक संज्ञा है। यीशु मसीह के माध्यम से पुत्रों के रूप में, स्वयं के लिए, उसकी इच्छा के दयालु इरादे के लिए, उसके अनुग्रह की महिमा की प्रशंसा के लिए, जिसे उसने हमें प्रिय, अमूर्त संज्ञा में मुफ्त में दिया है। उसमें, हमें छुटकारा, संज्ञा, उसके लहू के द्वारा, हमारे अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जिसे उसने सभी ज्ञान, अंतर्दृष्टि, अमूर्त संज्ञा में हम पर उदारतापूर्वक बरसाया है।

उसने हमें अपनी इच्छा का रहस्य, अमूर्त संज्ञा, फिर से, अपने दयालु इरादे के अनुसार, जो उसने प्रशासन के उद्देश्य से उसमें निहित किया था, एक और संज्ञा, समय की परिपूर्णता के लिए उपयुक्त, एक अमूर्त संज्ञा, परिपूर्णता के साथ संबंधकारक वाक्यांश। तो, आप देखते हैं, चार छंदों की अवधि में, हमने अभी कितनी अनुवाद चुनौतियों की पहचान की है? पंद्रह? बीस? कुछ ऐसा ही। उनमें से बहुत सारे हैं।

ठीक है। तो याद रखिए, जब हम उसकी इच्छा का इरादा कहते हैं, तो ये दो चीजें हैं। इरादा एक है, और इच्छा एक है।

इसके अलावा, यह सब एक साथ रखा गया है। तो वास्तव में वहाँ तीन हैं। इसलिए हर बार जब हमारे पास अमूर्त संज्ञाओं के साथ एक जनन वाक्यांश होता है, तो हमें एक जटिल अनुवाद कठिनाई होती है।

यही कारण है कि पीटर ने कहा कि पॉल के लेखन को समझना मुश्किल हो सकता है। हाँ, यह बहुत सघन है। बहुत सारी जानकारी बहुत ही संक्षिप्त तरीके से एक साथ रखी गई है, और यह इसे समझना चुनौतीपूर्ण बनाता है।

ठीक है। तो, इस प्रस्तुति में, मेरा लक्ष्य सबसे पहले इस तथ्य को उजागर करना है कि ये चुनौतियाँ मौजूद हैं, इस तथ्य को उजागर करना है कि बाइबल पढ़ने वाले लोग इनका सामना करते हैं क्योंकि भाषा का उपयोग करने का यह तरीका अंग्रेजी में हमारे द्वारा कही गई बातों से बहुत अलग है। हम इस तरह से बात नहीं करते हैं, कम से कम जब तक कि आप पीएचडी नहीं लिख रहे हों, और आप इन सभी अमूर्त संज्ञाओं और इस तरह की चीजों का उपयोग करते हैं क्योंकि आप स्मार्ट दिखना चाहते हैं या जो भी हो।

लेकिन यह वह तरीका नहीं है जिससे हम आम तौर पर बात करते हैं। और यह विदेशी लगता है। और इसलिए, अगर यह विदेशी लगता है, तो यह समझ में नहीं आ सकता है।

तो, यह दोनों ही हो सकता है। और ज़रा सोचिए, दूसरी भाषाओं के बारे में क्या? उन लोगों के बारे में क्या जिन्हें सुसमाचार का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है, ईसाई चीज़ों का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है? उन्होंने पहले कभी बाइबल नहीं सुनी है। तो, यह उन दूसरी भाषाओं के लोगों के लिए भी विदेशी है, यहाँ तक कि उन भाषाओं के ईसाइयों के लिए भी, उसी तरह, कि यहाँ अमेरिका में हमारे चर्चों के लोगों के लिए इसे समझना एक चुनौती है।

अमूर्त संज्ञाओं का अनुवाद करने और उन्हें तोड़ने की पूरी प्रक्रिया में इन अंशों की व्याख्या करने के लिए इन कौशलों को विकसित करने में समय लगता है, और इन अंशों को संप्रेषित करने के कौशल विकसित करने में भी समय लगता है। तो, आइए हम कुछ बुनियादी चीज़ों के बारे में बात करें जिन्हें हम लागू करने के लिए कर सकते हैं ताकि हम इन जटिल मुद्दों को तोड़ सकें और संप्रेषित कर सकें। ठीक है, तो प्रेरितों के काम 13:12 में, पौलुस और बरनबास शिक्षा दे रहे थे, और वहाँ एक राज्यपाल था, और पौलुस ने कुछ काम किए।

अंत में, राज्यपाल ने यीशु पर विश्वास किया जब उसने देखा कि क्या हुआ था। कोई व्यक्ति प्रभु की शिक्षा से चकित होकर अंधा हो गया था। यहाँ प्रभु की शिक्षा का क्या अर्थ है? तो, राज्यपाल ही वह व्यक्ति था जो चकित था।

ठीक है, तो प्रभु की शिक्षा, सिखाने की क्रिया, पॉल और बरनबास ही शिक्षा दे रहे थे, और प्रभु का वचन ही वह था जो वे सिखा रहे थे, प्रभु के बारे में वचन या शास्त्र, और वे इसे राज्यपाल को सिखा रहे थे। राज्यपाल इस बात से चकित था कि पॉल और बरनबास ने प्रभु के बारे में क्या सिखाया या पॉल और बरनबास ने शास्त्रों से क्या सिखाया। लेकिन फिर से, प्रभु वहाँ केंद्र बिंदु है।

वह यीशु के बारे में बातें सीख रहा है। वह परमेश्वर के बारे में ऐसी बातें सीख रहा है जो उसे पहले नहीं पता थीं, और उसने पौलुस और बरनबास में चमत्कार करते हुए शक्ति देखी, और फिर उसने जो कुछ सुना उससे वह चकित रह गया। और यही यहाँ का अर्थ है।

हम इसे समझाने की कोशिश कर रहे हैं। क्या यह कहने का सबसे अच्छा तरीका है? मुझे सच में यकीन नहीं है। वैसे, जब भी हम अनुवाद करते हैं, हम हर दिन अपर्याप्तता और विनम्रता की भावना में चलते हैं।

क्या मैंने इसे सही तरीके से समझा है? क्या हमने इसे सही तरीके से व्यक्त किया है? और हम चीजों को हल्के में लेते हैं और इसके बारे में बहुत ज़्यादा हठधर्मी नहीं होने की कोशिश करते हैं। जब मैं ओरमा में काम कर रहा था, तो मैं दो या तीन ओरमा पुरुषों के साथ काम कर रहा था जो वास्तव में आस्तिक नहीं थे, और मैं हमारे घर के पास काम कर रहा था। और इसलिए, हर दिन, मैं दोपहर के भोजन और रात के खाने के लिए, नाश्ते के लिए वहाँ जाता हूँ।

और मेरे 10 साल के बेटे ने कहा, पापा, आप ही इसका अनुवाद कर रहे हैं। और यह बाइबल जिसका आप अनुवाद कर रहे हैं, वह लंबे समय तक रहेगी। और अगर आप इसे सही तरीके से करते हैं, तो यह लंबे समय तक रहेगी।

अगर आप गलत हैं, तो यह लंबे समय तक बना रहेगा। उसने मुझसे कहा, क्या तुम कभी इस बारे में सोचते हो? मैंने कहा, बेटा, मैं हर दिन हर मिनट इस बात से जूझता हूँ। हम ईश्वर पर भरोसा करते हैं कि वह हमें समझने और इसे व्यक्त करने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा।

अगर मेरे पास समय होता, तो मैं आपको ऐसी कहानियाँ सुना सकता था कि कैसे भगवान ने हमारे मन में पवित्र आत्मा का संचार किया, जिससे हमें न केवल इसे समझने का सही तरीका मिला, बल्कि किसी तरह हम इसे एक निश्चित तरीके से कह भी देते थे, और लोग कहते थे, वाह। लेकिन मेरे पास समय नहीं है। लेकिन फिर कभी।

एक और उदाहरण वही वाक्यांश है जो किसी को सिखाता है। तो, प्रकाशितवाक्य 2:15 में, इसलिए तुम्हारे पास भी कुछ हैं, मुझे माफ करना, क्योंकि तुम्हारे पास भी कुछ ऐसे हैं जो उसी तरह से निकोलायतों की शिक्षाओं को मानते हैं। तो, पहला प्रभु की शिक्षा थी, और दूसरा निकोलायतों की शिक्षा थी।

तो, संज्ञाओं को तोड़ो। शिक्षण का अर्थ है सिखाना। निकोलायन लोग ही शिक्षण का कार्य करते हैं।

वे चीज़ें सिखा रहे हैं, और वे दूसरे लोगों को चीज़ें सिखा रहे हैं। हमारे पास एक अजीब, वैसे भी थोड़ा अजीब, क्रिया है, हालाँकि, उन चीज़ों को धारण करने के लिए। आप शिक्षाओं को कैसे धारण करते हैं? यह थोड़ा अमूर्त है।

हम इसे कुछ हद तक समझते हैं। इसी तरह, कुछ लोग ऐसे भी हैं जो निकोलायनियों द्वारा सिखाई गई बातों पर विश्वास करते हैं या उनकी पुष्टि करते हैं या जो सिखा रहे हैं या सिखा रहे हैं। इसलिए, हम फिर से उन्हीं सिद्धांतों का उपयोग कर रहे हैं, इसे तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

अन्य उदाहरण। तो यह मार्क 4, बीज बोने वाले के दृष्टांत से आता है। लेकिन दुनिया की चिंताएँ, धन का धोखा, और अन्य चीज़ों की इच्छाएँ अंदर प्रवेश करती हैं और वचन को दबा देती हैं, और यह निष्फल हो जाता है।

स्पष्ट। जब यीशु ने बिना किसी स्पष्टीकरण के यह दृष्टांत सुनाया, तो उसके शिष्यों ने कहा, क्षमा करें, हम आपकी कही गई कोई भी बात नहीं समझ पाए। क्या आप कृपया हमें यह समझा सकते हैं? और यह उनकी व्याख्या है।

और मैं यह सोचकर वापस आता हूँ कि, ठीक है, मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ। खैर, जब हम तंजानिया में काम कर रहे थे, हम एक कार्यालय में थे, और हमारे पास 10 अलग-अलग भाषाएँ थीं। हमारे पास 10 अलग-अलग ईसाई समुदायों के लोग एक साथ अनुवाद कर रहे थे।

और पहली किताबों में से एक जो हमने साथ मिलकर लिखी थी, वह थी मार्क की किताब। और इसलिए मैंने मार्क को बहुत पढ़ा। और हम इस आयत पर पहुँचे, और हम इन वाक्यांशों का अर्थ समझना चाहते थे। इनमें से एक वाक्यांश है दुनिया की चिंताएँ।

इसका क्या मतलब है? क्या दुनिया चिंता कर रही है? नहीं, तो यह व्यक्तिपरक नहीं है। यह किसी तरह वस्तुनिष्ठ है। चिंता, इसका क्या मतलब है? तो, क्रिया क्या है? क्रिया है चिंता करना।

कौन चिंता करता है? दुनिया चिंता नहीं करती, इसलिए किसी तरह, लोग चिंता कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, दृष्टांत में, हम पीछे हटते हैं और कहते हैं, ठीक है, भगवान किस बारे में बात कर रहे हैं, या यीशु किस बारे में बात कर रहे हैं, जिन लोगों ने वचन प्राप्त किया है वे चिंता करना शुरू कर देते हैं। वे किस बारे में चिंता कर रहे हैं? वे चीजों के बारे में चिंता कर रहे हैं, और हम इसे एक सेकंड में विस्तार से बताएंगे।

ठीक है, दुनिया क्या दर्शाती है? फिर से, यह किसी तरह का मुहावरा या आलंकारिक अभिव्यक्ति है, शायद रूपक, जहाँ दुनिया किसी और चीज़ का प्रतिनिधित्व करती है। यह शब्द क्या दर्शाता है? क्या यह सांसारिक चीज़ों का प्रतिनिधित्व करता है? यीशु ने कहा, तुम दुनिया में हो लेकिन दुनिया के नहीं हो। यह थोड़ा अलग दिखता है, और यह तुरंत अन्य चीज़ों की इच्छाओं से पहले आता है, और यह तुरंत धन से पहले आता है, और इसलिए किसी तरह वे थोड़े समानार्थी हो सकते हैं, या कम से कम एक ही सामान्य श्रेणी में हो सकते हैं।

ठीक है, तो क्या वे सांसारिक चीज़ें हैं? धन शब्द को देखते हुए? हाँ, शायद। ठीक है, चिंता और दुनिया के बीच क्या संबंध है? यही हमें खुद से पूछना है, और यह दुनिया की चीज़ों के बारे में चिंता करने जैसा लगता है, शायद सांसारिक संपत्ति के बारे में चिंता करना। ठीक है, तो इसे फिर से कहने का एक तरीका यह है कि जब वे सांसारिक चीज़ों के बारे में चिंता करते हैं, तो अल्पविराम, और फिर हम आगे बढ़ेंगे।

फिर से, हमें इसे चरणबद्ध तरीके से करना होगा, धीरे-धीरे इन चीज़ों को समझना होगा। अगला विषय है धन का धोखा, और यही वह था जिसने हमारे तंजानियाई अनुवादकों के लिए समस्याएँ पैदा कीं। फिर से, हम स्वाहिली में संचार की भाषा के रूप में काम कर रहे हैं, और फिर प्रत्येक टीम इसे अपनी भाषा में अनुवाद करेगी।

धन का धोखा। क्रिया, धोखा देना। धन और लोग।

धोखा कौन दे रहा है? हम न केवल यह पहचानते हैं कि इसमें भाग लेने वाले कौन हैं, बल्कि यह भी कि क्या लोग धन को धोखा दे रहे हैं? क्या धन लोगों को धोखा दे रहा है? इसलिए, जब मैंने हमारे तंजानियाई अनुवादकों से पूछा कि इसका क्या मतलब है, तो उन्होंने यही कहा, और यह स्वाहिली में धन के धोखे का शाब्दिक अनुवाद है। उदंगनिफू वामाली . धन का छल.

और मैंने पूछा, तो इसका क्या मतलब है? उन्होंने कहा, ठीक है, किसी को धोखा देकर उसकी दौलत छीनना गलत है। तो शब्द उदंगनिफू , या दंगन्या , क्रिया है। इसका मतलब है फ़ायदा उठाना।

इसका मतलब है लोगों को धोखा देना, ठगना, ठगना। इसलिए, इस डांगन्या का मतलब उन्हें सच्चाई के बारे में धोखा देना नहीं है। यह वास्तव में अफ़्रीकी दिमाग में किसी को ठगने या किसी चीज़ से धोखा देने का विचार है।

और इसलिए, अगर हम सभी प्रतिभागियों के बारे में बात कर रहे हैं, तो आप किसी व्यक्ति को कुछ संपत्ति से वंचित कर रहे हैं। और इसलिए, उन्होंने कहा कि लोगों से पैसे ठगना बुरा है। क्या यह वाक्यांश इस विशेष श्लोक में यही कह रहा है? मुझे गंभीरता से नहीं लगता कि यह ऐसा है।

वे यह भूल गए कि नंबर एक, यह मानवीकरण है, जहाँ पैसा कुछ कर रहा है, माफ़ कीजिए, हाँ, धन कुछ कर रहा है। और वे यह भूल गए कि धन वास्तव में वह चीज़ है जो धोखा दे रही है। तो, यह वस्तुनिष्ठ है, माफ़ कीजिए, व्यक्तिपरक।

विषय, धन, धोखा दे रहा है, और धोखा खा रहे लोग इस क्रिया में अन्य भागीदार हैं। इसलिए, अगर हम इसे दूसरे तरीके से कहना चाहते हैं, तो वे धन द्वारा धोखा खा रहे हैं। फिर से, हमें इसे तोड़ते हुए कदम दर कदम आगे बढ़ना होगा।

ठीक है। दुनिया की चिंताएँ, हमने उसे तोड़ दिया। धन की धोखाधड़ी, हमने उसे तोड़ दिया।

एक और चीज़ है जिसके बारे में हमें बात करनी चाहिए। दूसरी चीज़ों की इच्छाएँ। तो इच्छाएँ, यह कोई जननात्मक वाक्यांश नहीं है, लेकिन इच्छाएँ एक मौखिक संज्ञा है।

और चोक एक क्रिया है; यह एक सीधी क्रिया है। तो, चीज़ें दुनिया का दम घोट रही हैं। फिर से, यह बहुत ही आलंकारिक भाषा है।

तो, इच्छा। और इस आयत में जिन लोगों का ज़िक्र किया जा रहा है, उन्हें यह शब्द मिला है कि वे चीज़ों की इच्छा करें। अन्य चीज़ों की इच्छा, यह स्पष्ट नहीं करता, लेकिन हम इसकी व्याख्या कर सकते हैं।

दुनिया की चिंता, धन-दौलत का धोखा और दूसरी चीज़ों की चाहत ये सब एक ही सामान्य श्रेणी में आते हैं। और इन इच्छाओं को दबा दो, इन चीज़ों को दबा दो। एक और चीज़ निष्फल हो गई है, और यह थोड़ा अलग है, लेकिन यह एक लाक्षणिक तरीका है, क्योंकि आप कहते हैं कि शब्द निष्फल हो जाता है।

हम इसे कैसे समझें? हम इसे कैसे समझें? तो, फलदायी होने का मतलब है फल पैदा करना। निष्फल होने का मतलब है कि यह फल पैदा नहीं करता। तो, फल पैदा करना या फल देना।

तो, शब्द लोगों के जीवन में फल दे रहा है। और इसलिए फिर से, शब्द एक अमूर्त अवधारणा है, और यह एक मानवीकरण है। शब्द कुछ कर रहा है।

शब्द उसी तरह काम नहीं करते जैसे सजीव वस्तुएँ करती हैं। फल भी प्रतीकात्मक है। किसके लिए प्रतीकात्मक? अच्छे काम, आज्ञाकारिता, विश्वास, ये सब चीजें।

यह सब उस शब्द फल में समाहित है। तो, यह एक बहुत ही भरा हुआ वाक्य है जिसमें तीन खंड हैं, और इसके सभी अन्य भाग एक साथ बंधे हुए हैं। इसलिए, हमने इनमें से प्रत्येक भाग को तोड़ दिया है।

हम यह सब एक साथ कैसे रख सकते हैं? हम इसे कहने का दूसरा तरीका कैसे खोज सकते हैं? ठीक है, तो बीज बोने वाले का दृष्टांत, इसी तरह से शुरू हुआ। लेकिन दुनिया की चिंताएँ, धन का धोखा, और दूसरी चीजों की इच्छाएँ इसमें प्रवेश करती हैं और वचन को दबा देती हैं, और यह निष्फल हो जाता है। यहीं से हमने शुरुआत की।

यहाँ एक संभावित अनुवाद है। लेकिन जब वे सांसारिक चीजों के बारे में चिंता करते हैं और धन-संपत्ति की चाहत में धोखा खाते हैं और दूसरी चीजों की इच्छा करते हैं, तो ये चीजें वचन को दबा देती हैं, और उनमें फल नहीं पैदा करती हैं। तो, क्या यह अनुवाद सही है? मुझे नहीं पता।

क्या यह हमारे विचार से अर्थ के करीब है? यह करीब है। क्या यह बेहतर है? यह आपको तय करना है। लेकिन फिर से, हम अंग्रेजी में तैयार किए गए इस अनुवाद को ले सकते हैं, इसे चर्चा के बिंदु के रूप में उपयोग कर सकते हैं, हम इस पर विचार कर रहे हैं, और फिर उस विशेष वाक्यांश का उपयोग इस दूसरी भाषा में करते हैं।

ठीक है, जब आप ऐसा करते हैं, तो हर तरह से टिप्पणियों, अन्य बाइबिल संस्करणों, किसी भी अन्य संसाधन का उपयोग करें जो आप कर सकते हैं, और एक ऐसी व्याख्या पर पहुंचने का प्रयास करें जो स्वीकार्य सीमा में हो। यह सही व्याख्या नहीं हो सकती है; हो सकता है कि आप वह सब कुछ न कह पाएं जो आप कहना चाहते हैं, लेकिन उम्मीद है कि हम ऐसी व्याख्या नहीं कर रहे हैं जो हर किसी ने जो कुछ भी कहा है उससे मौलिक रूप से अलग हो। तो, क्या अधिकांश लोगों के लिए इससे सहमत होना सुरक्षित है, या अधिकांश टिप्पणीकारों ने इसके बारे में समान बातें कही हैं? इसलिए हम इन सभी संसाधनों का उपयोग करते हैं।

मैंने जो कुछ भी कहा है, उसे समझने में हमने अब तक जो कुछ भी किया है, वह है इसे भाषाई रूप से तोड़ना, इन सभी अलग-अलग हिस्सों को तोड़ना, और इन विभिन्न अनुवाद रणनीतियों, इन विभिन्न अनुवाद सिद्धांतों का उपयोग करना, लेकिन हम इसे शून्य में नहीं कर रहे हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो हमसे बहुत पहले रह चुके हैं और जिन्होंने 2,000 से अधिक वर्षों से इन सभी चीजों के बारे में लिखा है, और हमें उन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। ठीक है, यहाँ रोमियों

1 से एक उदाहरण है, और यह मेरे काम का हिस्सा था जब मैंने युगांडा में उस अनुवाद कार्यशाला में भाग लिया था।

रोमियों 1, पौलुस, यीशु मसीह का दास, मसीह यीशु का, परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग से प्रेरित के रूप में बुलाया गया, जिसे उसने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्रों में अपने पुत्र के विषय में पहले से ही वादा किया था, जो शरीर के अनुसार दाऊद के वंश से पैदा हुआ था, जिसे पवित्रता की आत्मा के अनुसार मृतकों में से पुनरुत्थान द्वारा शक्ति के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया था, यीशु मसीह, हमारा प्रभु, जिसके द्वारा हमें उसके नाम के कारण अन्यजातियों में विश्वास की आज्ञाकारिता लाने के लिए अनुग्रह और प्रेरिताई मिली, जिनके बीच में तुम भी रोम में परमेश्वर के सभी प्रियजनों के लिए मसीह के बुलाए हुए कहलाते हो। पॉल ने अभी तक शुरू भी नहीं किया है, और यह उसका परिचय है। वाह।

ठीक है, तो हम इस सब के साथ क्या करते हैं? चलो इसे खत्म करते हैं। तो, मुझे शायद इसमें समय लगेगा - वास्तव में, मुझे इस पर एक सेकंड वापस जाना चाहिए। तो, जब मैं अपने कार्यालय में इस पर काम कर रहा था, मैं घर से काम कर रहा था, और मेरे बच्चे वहाँ थे।

और इसलिए दोपहर के भोजन के समय, उन्हें पता चला कि मैं रोमियों पर काम कर रहा था। और इसलिए, उन्होंने पूछा, तो पिताजी, आपने आज क्या पढ़ा? आपने किस पर काम किया? और मैंने कहा कि मैंने रोमियों 1 से 7 पर काम किया। ठीक है, पिताजी, इसका क्या मतलब है? और मैंने कहा, मुझे कुछ पता नहीं है। मुझे नहीं पता।

मैंने वास्तव में इन सभी बातों को विस्तार से नहीं समझा था। खैर, हम जो करते हैं उसका एक हिस्सा प्रत्येक खंड को देखना है और, अन्य खंडों से संबंधित, कौन सा खंड मुख्य है और कौन सा किसी और चीज़ की व्याख्या है। इसलिए, हम जानकारी को एक साथ प्रवाहित करने के तरीके को देखते हैं।

उदाहरण के लिए, पौलुस, मसीह का दास, जिसे प्रेरित कहा जाता है, परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग रखा गया है, जिसकी उसने पहले से प्रतिज्ञा की थी, वह परमेश्वर के सुसमाचार के अधीन है। तो यह उसके नीचे है, शास्त्रों में उसके पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से।

तो वादे भविष्यद्वक्ताओं से आए, और भविष्यद्वक्ताओं ने हमें शास्त्रों में इसके बारे में बताया। हमें उन खंडों के बीच सभी अंतर्संबंधों पर काम करना होगा। वैसे, खंड और वाक्यांश के बीच क्या अंतर है? खंड एक वाक्यांश है जिसमें क्रिया शामिल होती है।

अगर वहाँ कोई क्रिया नहीं है, तो यह एक खंड नहीं हो सकता है। कभी-कभी, हमारे पास ग्रीक और हिब्रू में और स्वाहिली और अन्य भाषाओं में, क्रिया के साथ एक क्रिया रहित खंड होता है। जैसे, वह राष्ट्रपति है।

और कभी-कभी आप स्वाहिली में कह सकते हैं कि वह राष्ट्रपति हैं। और यह बिल्कुल सही अर्थ रखता है। तो, क्रिया के अलावा, खंड एक क्रिया के साथ एक वाक्यांश है।

इसलिए, हम इन खंडीय संबंधों को देखते हैं और देखते हैं कि क्या प्रमुख है और क्या अधीनस्थ है। हमें उन सभी चीजों को देखने की जरूरत है। एक बार जब हम यह स्थापित कर लेते हैं, तो हम प्रतिभागियों को देखना शुरू कर देंगे।

हम क्रिया को ही देखते हैं। यहाँ कौन सी ठोस परिमित क्रिया होने जा रही है? और यह सब कैसे एक साथ फिट होता है और आपस में जुड़ता है? यह वास्तव में बहुत जटिल है। तो, ये नए नियम में 7,800 आयतों में से सात आयतें हैं।

ठीक है, तो अब हम 7,793 पर आ गए हैं। बढ़िया। और इसे समझने और अनुवाद करने में हमें कितना समय लगेगा? इसमें एक दिन लग सकता है, या कई दिन भी लग सकते हैं।

और यह सिर्फ इसे समझने के लिए है। अनुवाद का काम ऐसा ही है। ठीक है, तो चलिए इसे समाप्त करते हैं और कहते हैं कि हम अब तक यही कर रहे हैं।

इसलिए, हम मौखिक संज्ञाओं और कृतंतों की पहचान करते हैं, और हम प्रतिभागियों की पहचान करते हैं, चाहे वे सजीव हों या निर्जीव। क्या इसमें किसी तरह का अलंकार शामिल है? कभी-कभी एक ही वाक्य में कई अलंकार होते हैं, जैसा कि हमने देखा। क्या इसमें मानवीकरण है? हम दो उपवाक्यों के बीच संबंध निर्धारित करते हैं।

उदाहरण के लिए, विश्वास की आज्ञाकारिता का अर्थ है अन्यजातियों में विश्वास की आज्ञाकारिता उत्पन्न करना। इसलिए, वे आज्ञा मानते हैं, वे विश्वास करते हैं। यदि हम आज्ञाकारिता को क्रिया के रूप में तोड़ना चाहते हैं, तो यह आज्ञा मानना है, और क्रिया के रूप में विश्वास का अर्थ है विश्वास करना।

तो फिर, हम उन्हें एक साथ कैसे फिट करते हैं? वे कैसे जुड़े हुए हैं? यही वह सवाल है जो हमें खुद से पूछना है। सुसमाचार का प्रचार अन्यजातियों में क्या पैदा करेगा? और हम कह सकते हैं, विश्वास रखें, या विश्वास करें और आज्ञा मानें। तो यही वह है जो पौलुस पूरा करने की कोशिश कर रहा है, कि रोमी अन्यजाति क्या करेंगे? वे मसीह में विश्वास करेंगे, और वे मसीह की शिक्षाओं का पालन करेंगे।

तो, आस्था की आज्ञाकारिता को इस तरह से तोड़ा जा सकता है। लेकिन इसे उस वाक्य में डालने की कोशिश करें, और यह सात लंबे श्लोक हैं और इसे एक साथ फिट करने की कोशिश कर रहे हैं। हाँ, यह चुनौतीपूर्ण है।

तो, फिर हम उस श्लोक को फिर से लिखते हैं, जितना हम कर सकते हैं, ताकि किसी तरह का पहला मसौदा तैयार हो सके। फिर, हम उस श्लोक को अनुवाद के आधार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। और यही वह प्रक्रिया है जिससे हम गुजरे।

मुझे उम्मीद है कि यह मददगार रहा होगा। हमारी अगली चर्चा निष्क्रिय निर्माणों पर होगी। धन्यवाद।

यह डॉ. जॉर्ज पैटन द्वारा बाइबल अनुवाद पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 22 है, मौखिक विचार और संबंधपरक वाक्यांश।